कलीसिया अध्याय 46

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **प्रकाशितवाक्य 12-14**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (प्रकाशितवाक्य 12-14) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख पद]* **(19) यूहन्ना 17:15**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।

(19) यूहन्ना 17:15। यह विनती नहीं करता, कि तू उन्हें जगत से उठा ले, परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्ट से बचाए रख।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 21**

परिचय दें। **यूहन्ना 21:1-25** का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। यूहन्ना अध्याय 21 में यीशु गलील की झील पर अपने सात शिष्यों को दिखाई देता है और पतरस को प्रेरित के रूप में पुनः स्थापित करता है। फिर लेखक यूहन्ना रचित सुसमाचार में दर्ज की गई चीजों की विश्वसनीयता के संबंध में लोगों के एक समूह की एकजुट गवाही के साथ सुसमाचार का निष्कर्ष निकलता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 21:1-25 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

खोज 1. मछली को गुणन करने के चमत्कार का महत्व।

यूहन्ना 16:32 में यीशु मसीह ने कहा था, "एक समय आ रहा है.... कि तुम तित्तर बित्तर कर दिए जाओगे, प्रत्येक अपने-अपने घर (और व्यापार) को।" यीशु मसीह के क्रूस पर चढ़ने और पुनरुत्थान के पश्चात तक, शिष्यों ने परमेश्वर के राज्य में अपनी गतिविधियों के प्रति पराजय मान ली थी और आजीविका प्राप्त करने के लिए अपने पूर्व व्यवसायों में लौट गए थे। उनमें से कुछ मछुआरे थे और फिर से मछली पकड़ने चले गए। और अत: इतिहास ने स्वयं को दोहराया। बिलकुल जैसे लूका 5 में, इन शिष्यों ने मछली पकड़ने के लिए सारी रात संघर्ष किया और उन्होंने कुछ भी नहीं पकड़ा! यह संभव है कि उनकी रात भर की विफलता परमेश्वर के राज्य में उनके काम की उपेक्षा करने के लिए उनके प्रति परमेश्वर की अप्रसन्नता का प्रकाशन था। फिर भी, परमेश्वर उनसे प्रेम करता था और उन्हें छोड़ा नहीं!

(1) मछली को गुणन करने के चमत्कार का उद्देश्य।

सुबह-सुबह, यीशु मसीह गलील झील के किनारे पर खड़ा हो गया, परन्तु भोर या सुबह की धुंध के कारण वे उसे पहचान नहीं पाए। उसने उन्हें यह कहते हुए बुलाया, "साथियों, तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ भी नहीं है, है क्या?" यीशु जानता था कि उन्होंने कुछ नहीं पकड़ा है, परन्तु फिर भी उसने इस तथ्य पर ध्यान देने के लिए इस प्रश्न पूछा कि पहले के व्यवसाय (मछली पकड़ना) में उनकी वापसी पूर्ण रीति से विफल रही है। शिष्य अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना के साथ पर्याप्त रूप से सम्मिलित होने में विफल रहे थे। यह ऐसा था जैसे यीशु अपने शिष्यों से कह रहा था, "तुमने कुछ भी नहीं पकड़ा है, क्या ऐसा ही नहीं है? मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते! (यूहन्ना 15:5)" यीशु मसीह चाहता था कि उसके शिष्य इस सीख को एक बार हमेशा के लिए सीखें: प्रभु यीशु मसीह के बिना, वे कुछ नहीं कर सकते थे (जिसका अनंतकाल के लिए महत्व हो), परन्तु यीशु के साथ, उनके जीवन के लिए उनकी असाधारण योजना पूरी होगी!

शिष्यों ने साधारण रूप से उत्तर दिया "नहीं"। तब यीशु ने कहा, "नाव के दाईं ओर अपना जाल डालो और तुम मछली पाओगे।" शिष्यों की प्रतिक्रिया बहुत ही असामान्य थी। अनुभवी मछुआरे आमतौर पर एक बिलकुल अजनबी को उन्हें दिशा देने की अनुमति नहीं देते हैं और विशेष रूप से उस व्यापार के विषय में नहीं जिसका उन्होंने अपने सारे जीवन भर अभ्यास किया था! परन्तु क्योंकि अजनबी की आवाज का स्वर इतना सम्मोहक था, वे तुरंत मान गए। उन्होंने इतनी सारी मछलियाँ पकड़ीं कि वे नाव में शिकार डालने की लगातार सफलता के बिना संघर्ष करते रहे(अपूर्ण काल)। उन्हें जाल को खींचकर किनारे तक लाना पड़ा। इसके पश्चात उन्होंने 153 बड़ी मछलियों को गिना और फिर भी जाल नहीं फटा। इस वचन में मछली को चमत्कारी रूप से पकड़ने के पहले चमत्कार का वर्णन है!

मछली के गुणन के इस चमत्कार का दुगना उद्देश्य था।

- चमत्कार का पहला उद्देश्य शिष्यों की आंखें खोलना था ताकि वे देखें कि वे स्वयं कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते(यूहन्ना 15:5)।

- चमत्कार का दूसरा उद्देश्य चेलों का यीशु मसीह में विश्वास और उनके लिए उसकी निरंतर शक्ति और प्रेम को बलवंत करना था!

जो मुझे प्रभावित करता है, वह यह है कि यीशु बार-बार मेरे जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में प्रवेश करता है और मुझे बार-बार एक नया मौका, एक नया कार्य और मेरे जीवन के लिए एक नई आशा देता है! जब वह एक दरवाजा बंद करता है, तो वह हमेशा एक अन्य दरवाजा खोलता है (प्रकाशितवाक्य 3:7-8)। जब उसने मेरे जीवन का पहला अध्याय लिखना समाप्त किया, तो उसने दूसरा अध्याय लिखना आरम्भ किया। "हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है, और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते है। यह प्रगट है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी" (2 कुरिन्थियों 3:2-3)।

(2) इस चमत्कार का संभावित प्रतीकात्मक अर्थ।

बाइबल मछली की संख्या "153" के लिए कोई अर्थ नहीं बताती है। यदि इस संख्या से कोई प्रतीकात्मक अर्थ जुड़े हुए होते, तो इस प्रसंग में उसका विषय आशय से कुछ संबंध होता। यह संभवत: इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि शिष्य अपने उपदेश और शिक्षा के माध्यम से यीशु मसीह में नए विश्वासियों का एक बड़ा शिकार पकड़ेंगे (मत्ती 4:19; 24:14)।

यदि इस तथ्य से कोई प्रतीकात्मक अर्थ जुड़े होते कि जाल नहीं फटा, तो इसका अर्थ यह होना चाहिए कि "सुसमाचार का जाल" कभी नहीं फटेगा, चाहे वह कितने ही धर्मान्तरित क्यों न हो! परमेश्वर के राज्य में सुसमाचार द्वारा लाए गए धर्मान्तरित लोगों की संख्या की कोई सीमा नहीं है (प्रकाशितवाक्य 5:9-10; 7:9)! यदि इस तथ्य से कोई प्रतीकात्मक अर्थ जुड़े होते कि शिष्य पतरस की नाव में मछलियों के बड़े शिकार को डाल नहीं पाए, तो इसका सीधा सा अर्थ यह है कि अच्छे चरवाहे के झुंड में सभी भेड़ों को पालने के लिए कोई भेड़-बाड़ा काफी बड़ा नहीं है (यूहन्ना 10:3-16)। दुनिया में सभी मसीहियों को परमेश्वर के राज्य में समायोजित करने के लिए कोई भी मण्डली या कलीसिया संप्रदाय पर्याप्त नहीं है! महान आज्ञा को पूरा करने के लिए दुनिया की सभी कलीसियाओं को एक दूसरे की आवश्यकता है!

खोज 2. एक मछली और एक रोटी को गुणा करने के चमत्कार का महत्व।

(1) एक मछली और एक रोटी को गुणा करने के चमत्कार का उद्देश्य।

शिष्य यूहन्ना आमतौर पर पतरस की तुलना में कुछ जल्दी समझ जाता था और शिष्य पतरस आमतौर पर यूहन्ना की तुलना में जल्दी काम करता था (सीएफ। यूहन्ना 20:3-6)। इसलिए जब यूहन्ना को पता चल गया कि किनारे पर यीशु खड़ा था, तो उसने पतरस को बताया और पतरस किनारे तक तैरने के लिए झील में कूद गया, क्योंकि वह यीशु के पास सबसे पहले पहुँचना चाहता था। अन्य शिष्य पीछे नाव में आए और

मछलियों से भरे जाल को खींचकर किनारे पर ले गए। जब वे उतरे तो उन्होंने जलते हुए अंगारों की एक आग पर मछली (एकवचन) और उसके साथ रोटी (एकवचन) देखी। [1]

यदि पद 9 और पद 13 में "मछली" और "रोटी" शब्द का सामूहिक महत्व है (मछली के टुकड़े और रोटी के टुकड़े), तो यह वचन एक चमत्कार का नहीं, बल्कि एक साधारण नाश्ते का वर्णन करता है। तब यीशु ने शिष्यों से कहा कि वे अभी-अभी पकड़ी गई मछलियों में से कुछ लाएँ। परन्तु यदि इन शब्दों का एक एकवचन महत्व है, जैसा कि निश्चित रूप से उनके पास पद 13 (एक मछली और एक रोटी) [2] में है, तो यीशु ने उन्हें जो कुछ दिया वह उन मछलियों से नहीं आया जिन्हें शिष्यों ने पकड़ा था! फिर यह वचन एक मछली और एक रोटी को गुणा करने का दूसरा चमत्कार बताता है!

यूहन्ना 6 में, यीशु मसीह ने एक चमत्कार किया और महिलाओं और बच्चों के अलावा, पाँच हजार पुरुषों को पाँच रोटी और दो मछलियों के साथ खिलाया (यूहन्ना 6:11)। यूहन्ना 21 में यीशु मसीह ने सात भूखे आदमियों को उसके साथ एक अख़मीरी रोटी और एक मछली से नाश्ता करने को आमंत्रित किया, जो उसने स्वयं प्रदान की थी इससे पहले कि वे नाँव से उतरे थे और जो वहाँ से नहीं आए थे जो शिष्यों ने पकड़ा था। उसने अखमीरी रोटी में से लिया और उसे अपने शिष्यों को दी और उसने मछली के साथ भी ऐसा ही किया। ठीक ऐसा ही तब हुआ था जब यीशु ने पाँच हजार को खिलाया था। एक बार फिर यीशु ने एक मछली और एक रोटी बाँटकर उपस्थित भूखे लोगों के बीच एक चमत्कार किया!

एक रोटी और एक मछली के गुणन के इस चमत्कार का उद्देश्य भी दुगुना था।

- चमत्कार का पहला उद्देश्य शिष्यों को स्मरण दिलाना था कि उनके पास पूरा करने के लिए एक बुलाहट और नियुक्त कार्य था, अर्थात, अपने पूर्व व्यवसाय (मछली के मछुआरे होने का) में व्यस्त होना नहीं था, परन्तु सुसमाचार का प्रचार और सभी देशों में शिष्य बनाना था (मनुष्यों के मछुआरे होना) (मत्ती 4:19)।

- चमत्कार का दूसरा उद्देश्य उन्हें यह स्मरण दिलाना था कि यह हमेशा प्रभु यीशु मसीह है जो हृदय परिवर्तितों की संख्या को बढ़ाता है और जो आध्यात्मिक विकास देता है (1 कुरिन्थियों 3:6)!

(2) चमत्कार चिन्ह हैं।

गुणन के इन दोनों चमत्कारों में "एक चिन्ह" की विशेषताएँ हैं, अर्थात, इस संदेश के साथ एक चमत्कार कि यीशु मसीह कौन है! पाठकों को यह आभास दिया जाता है कि जो दिखता है उससे भी अधिक है, और आंतरिक महत्व शेष अध्याय में प्रकट होता है। चमत्कार उस समय के शिष्यों की सेवकाई कार्य गतिविधि के दृष्टान्त थे जो आगे आने वाले थे!

---

[1] यूनानी: ऑपसेरीऑन एपिकेमेनन काई आर्टन

[2] यूनानी: टन आर्टन काई तो ऑप्सारियन

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 21:1-25 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

21:15-17

प्रश्न 1. **यीशु ने पतरस से तीन बार क्यों पूछा कि क्या पतरस उससे प्यार करता है?**

ध्यान दें।

(1) इस अध्याय की घटना उस घटना का उलट है जिसमें पतरस ने यीशु का तीन बार इनकार किया था।

शिष्यों के साथ नाश्ता समाप्त होने के पश्चात, यीशु मसीह पतरस को सार्वजनिक रूप से प्रेरित के रूप में उसके कार्य में पुनः स्थापित करने के लिए पतरस की ओर मुड़ा। वह पूरी कलीसिया को अवगत कराना चाहता था कि उसने पतरस और साथ ही अन्य शिष्यों को उसका इनकार करने के लिए और उसे तब छोड़ने के लिए जब उसका मुकदमा चला और उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, क्षमा कर दिया था। परिस्थितियों और यीशु के शब्दों ने पतरस को उसके इनकार के दृश्य को स्मरण दिलाना था।

- यह एक आंगन में लकड़ी के कोयलों की आग के वहाँ था कि पतरस ने यीशु का इनकार कर दिया था (यूहन्ना 18:18) । यहाँ तट पर एक और लकड़ी के कोयलों की आग थी जहाँ वह यीशु के लिए अपने प्रेम का अंगीकार करने जा रहा था।

- इस दिन से लगभग दस दिन पहले, पतरस ने यीशु मसीह का सार्वजनिक रूप से यह कहकर तीन बार इनकार कर दिया था कि वह यीशु मसीह को नहीं जानता है (यूहन्ना 18:17,25,27)। अब वह सार्वजनिक रूप से यह कहकर यीशु मसीह को स्वीकार और उसका अंगीकार करने के लिए कायल था कि यीशु मसीह वह प्रभु था जिससे वह प्रेम करता था।
- पतरस के इनकार के संदर्भ में भविष्यवाणी को इन शब्दों के साथ पेश किया गया था "मैं तुम्हें सच बताता हूँ"(यूनानी: एमेन, एमेन) (यूहन्ना 13:38)। अब पतरस की भविष्य की मृत्यु के संदर्भ

में भविष्यवाणी फिर से इन्हीं शब्दों के साथ पेश की गई है (यूहन्ना 21:18)।

- यूहन्ना 13:36-38 में, पतरस ने प्रण लिया था कि वह यीशु का अनुसरण करेगा और कि वह यीशु के लिए अपनी जान दे देगा, परन्तु यीशु ने भविष्यवाणी की कि पतरस उसका तीन बार इनकार करेगा। क्रम था: यीशु का अनुसरण करना, यीशु के लिए अपना जीवन दे देना और फिर भी यीशु का इनकार करना।

  यूहन्ना 21:15-19 में, यीशु ने पतरस को उल्टा करने के लिए निर्देशित किया: तीन बार उसे इस बात की पुष्टि करनी थी कि वह यीशु से प्रेम करता था, और यीशु ने भविष्यवाणी की कि पतरस कैसे उसके लिए अपनी जान देगा और अंत में पतरस को उसका अनुसरण करने के लिए प्रबोधित किया। अब क्रम था: यीशु का अंगीकार करना, यीशु के लिए अपनी दे देना और यीशु का अनुसरण करना जारी रखना।

सच्चा शिष्यत्व शरीर की शक्ति (मानव इच्छा और मानव प्रयास) द्वारा यीशु मसीह का अनुसरण करने से नहीं होता है। सच्चा शिष्यत्व तब होगा जब आप इस बात की पुष्टि करेंगे कि यीशु आपका पहला प्रेम है (प्रकाशितवाक्य 2:4) और यीशु मसीह का अनुसरण करने की लागत की गिनती की होगी, अर्थात, *प्रतिदिन* अपना क्रूस उठाना (लूका 9:23; 14:25-30)।

(2) पतरस का डींग मारना पतरस की विनम्रता में बदल गया था।

मत्ती 26:33 में, पतरस ने सभी चेलों की उपस्थिति में यह दावा किया कि यदि वे सभी यीशु मसीह से दूर हो जाएँगे, तो वह पतरस कभी नहीं दूर होगा! पतरस के पास पूर्ण रीति से हवा भरा हुआ आत्म-सम्मान था और उसने स्वयं को दूसरे चेलों से ऊपर रखा था। इसलिए यीशु का यह पूछना उचित था कि क्या वह *अन्य शिष्यों से अधिक* यीशु से प्रेम करता था! यीशु ने पतरस को एक विनम्र अंगीकार करने का अवसर दिया कि वह अन्य शिष्यों से अपनी तुलना किए बिना यीशु से प्रेम करता था!

यीशु और पतरस इन पदों में "प्रेम" के लिए दो शब्दों का उपयोग करते हैं।

- पहले शब्द का अर्थ है "अपने कुल व्यक्तित्व, भावनाओं और कार्यों के साथ आत्म-बलिदान से प्रेम करना" (यूनानी: आगापाओ) (मरकुस 12:30-31)।
- दूसरे शब्द का अर्थ है "वास्तविक रूप से लगाव होना" विशेष रूप से दूसरे व्यक्ति के प्रति सम्बन्ध की एक व्यक्तिपरक भावना (यूनानी: फिलिओ)।

पहली बार, यीशु ने शाब्दिक रूप से पूछा था "क्या तू वास्तव में मुझे अपने संपूर्ण व्यक्तित्व के साथ, पूरी निष्ठा और आत्म-बलिदान के साथ अन्य शिष्यों से अधिक प्रेम करता है?" परन्तु पतरस उस समय नम्र हो गया जब उसने अपने पूर्व इनकार को स्मरण किया और देखा कि यीशु उसके विषय में सब कुछ जानता था। इसलिए उसने प्रेम के लिए दूसरे शब्द का उपयोग किया और सचमुच उत्तर दिया, "हाँ, प्रभु, आप जानते हैं कि मुझे आपसे सच्चा लगाव है (मैं आपको पसंद करता हूँ)।"

दूसरी बार, यीशु ने एक बार और शाब्दिक रूप से पूछा, "क्या तू वास्तव में मुझे अपने संपूर्ण व्यक्तित्व के साथ, पूरी निष्ठा और आत्म-बलिदान के साथ प्रेम करता है?" परन्तु पतरस ने फिर भी यह पुष्टि करने की हिम्मत नहीं की कि यीशु मसीह के लिए उसका यह सर्वोच्च प्रेम (ग्रीक: अगापे) है। तो उसने शाब्दिक उत्तर दिया, "हाँ, प्रभु, आप जानते हैं कि मुझे आपसे सच्चा लगाव है (यूनानी: फीलिआ)"

तीसरी बार, यीशु मसीह पतरस के स्तर तक उतर गया और उसी शब्द का उपयोग किया जिसे पतरस ने प्रेम के लिए उपयोग किया था और सचमुच पूछा, "क्या तेरा मुझसे सच्चा लगाव है (क्या तू मुझे पसंद करता है)?" पतरस को बहुत दुख हुआ, क्योंकि ऐसा लग रहा था जैसे कि यीशु के प्रति उसके व्यक्तिपरक लगाव पर यीशु ने प्रश्न उठाया था। फिर भी, पतरस ने अपनी सीख ले ली थी और विनम्र बना रहा। वह अब अपनी किसी भी चीज पर पुनर्विचार करने की हिम्मत नहीं करता था। अपने हृदय के भीतर, पतरस को यकीन हो गया था कि उसके पास यीशु मसीह के लिए पहले से अधिक नम्र प्रकार का प्रेम है और यीशु को इस बात का एहसास है। इसलिए उसने सचमुच उत्तर दिया, "प्रभु, तू सब बातें जानता है; तू जानता है कि मुझे तेरे से सच्चा लगाव है (तू जानता है कि मैं तुझे पसंद करता हूँ)।"

(3) पतरस को सम्मान के साथ बहाल किया गया।

तीन बार यीशु ने पतरस को उसका नियुक्त कार्य दोहराया:

- "मेरे मेमनों को खिला (चरा) (यूनानी: बोस्को)"
- "मेरी भेड़ों की चरवाही (यूनानी: पोईमाईनो) कर"
- "मेरी भेड़ों को खिला (चरा) (यूनानी: बोस्को)।"

सभी तीन क्रियाएँ अनिवार्य मनोदशा, निरंतर वर्तमान काल और सक्रिय आवाज में हैं।

यह कलीसिया में विश्वासियों के तीन अलग-अलग समूहों का उल्लेख नहीं करता है, उदाहरण के लिए, छोटे बच्चे, वयस्क और युवा लोग। बल्कि अलग-अलग शब्द अच्छे चरवाहे के *एक ही झुंड* का उल्लेख करते हैं, परन्तु इस झुंड को *दो अलग-अलग पहलुओं से देखा जाता है।*

- विश्वासियों और उनके बच्चों को पहले "मेमने" के रूप में देखा जाता है। वे अपरिपक्व, निर्बल और असहाय हैं। उन्हें वचन के बलवंत भोजन के साथ खिलाना आवश्यक है।
- दूसरी बात, उन्हें "भेड़" के रूप में देखा जाता है। वे चरवाहे से दूर भटकने के लिए प्रवृत्त हैं और प्रत्येक चीज के लिए एक अच्छे चरवाहे पर निर्भर हैं। इसलिए, उनकी चरवाही की आवश्यकता है, अर्थात, उन्हें कोमल प्रेम के साथ संरक्षित, नेतृत्व, खिलाना, आराम और देखभाल करने की आवश्यकता है।

कई वर्षों की सेवा के पश्चात, प्रेरित पतरस विनम्र बना रहा और यीशु मसीह को "मुख्य-चरवाहा" (1 पतरस 5:4; सीएफ। यूहन्ना 10:11-16) और "सभी विश्वासियों की आत्माओं के अधिदर्शक (यूनानी: बिशप)" के रूप में स्वीकार करता रहा (1 पतरस 2:25)। मसीही कलीसिया के अगुवे (प्राचीन)

मुख्य-चरवाहे के तहत "छोटे-चरवाहों" से अधिक कुछ नहीं हैं (1 पतरस 5:1-4; सीएफ। यहेजकेल 34:1-24)।

21:18-19

प्रश्न 2. **प्रेरित पतरस के भविष्य के विषय में यीशु ने क्या कहा?**

ध्यान दें।

(1) यीशु ने एक भविष्यवाणी की कि पतरस कैसे मरेगा।

पतरस को प्रेरित के पद पर बहाल करने के पश्चात, यीशु ने भविष्यवाणी की कि पतरस मसीह के लिए कैसे अपनी जान दे देगा। यीशु ने पहली बार पतरस के विषय में बात की थी जब वह "छोटा" था। वह तब शायद काफी स्वतंत्र व्यक्ति था, जिसने जो चाहा वह किया था। "उसने अपने कपड़े पहने और जहाँ वह चाहता था वहाँ गया।"

यीशु ने पतरस के विषय में ये बातें वर्ष 30 ई.पू. में अपने सातवें प्रकटीकरण के दौरान कही। तब पतरस यूहन्ना की तुलना में

शायद अधेड़ और आयु में अधिक था।

तब यीशु ने पतरस के विषय में बात की: "जब तू बूढ़ा होगा।" पतरस के जीवन में एक समय आता है कि वह अपने हाथों

को फैलाएगा और दूसरा उसे कपड़े पहनाएगा और उसे ऐसी जगह ले जाएगा जहाँ वह नहीं जाना चाहता था। प्रेरित यूहन्ना ने कहा कि यीशु ने यह ये बताने के लिए कहा था कि पतरस अपनी मृत्यु में उसकी महिमा कैसे करेगा। जब यूहन्ना रचित सुसमाचार ई.पू. 70 और 98 के बीच लिखा गया था, तब तक पतरस की मृत्यु हो चुकी थी और यह पता था कि पतरस की मृत्यु कैसे हुई थी। हालाँकि बाइबल हमें यह नहीं बताती है कि पतरस की मृत्यु कैसे हुई, प्राचीन कलीसिया के इतिहास ने निम्नलिखित को अभिलेखित किया: "पतरस ने फैलाव में यहूदियों को सुसमाचार का प्रचार किया, विशेष रूप से एशिया माइनर (आधुनिक तुर्की) में। अंत में, वह रोम में चला गया और 64 ई.पू. में सम्राट नीरो के नेतृत्व में (मसीहियों के) महान सताव के दौरान, पतरस को नीचे की ओर सिर करके क्रूस पर चढ़ाया गया था।"

(2) यीशु ने पतरस को जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में उसका पालन करना सिखाया।

जब यीशु ने यह भविष्यवाणी करना समाप्त कर दिया, तो उसने पतरस से कहा, "मेरा अनुसरण कर!" भविष्य में जो भी होगा, पतरस को *अब वर्तमान में* प्रभु यीशु मसीह का शिष्य और प्रेरित होना चाहिए और इस प्रकार सेवा में उनका अनुसरण करना चाहिए, दुख और अंत में मृत्यु तक में।

21:19-23

प्रश्न 3. **प्रेरित यूहन्ना के भविष्य के विषय में यीशु ने क्या कहा?**

ध्यान दें।

(1) यीशु ने यूहन्ना की मृत्यु के विषय में कोई भविष्यवाणी नहीं की।

जब यीशु पतरस के साथ चला गया, तो यूहन्ना उनके पीछे चला। पतरस ने इसे देखा और यीशु से यूहन्ना के भविष्य के विषय में पूछा। यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं चाहूँ कि वह तब तक जीवित रहे जब तक मैं वापिस न आ जाऊँ, तो उससे तुझे क्या फर्क पड़ता है? तुझे मेरा अनुसरण करना चाहिए (एक आदेश)।" क्योंकि यूहन्ना अभी भी जीवित था जब ये शब्द लिखें गए थे (70-98 ई.स. के बीच), कुछ मसीही अनुमान लगा रहे थे कि क्या यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक यूहन्ना जीवित रहेगा। यदि ये शब्द लिखे जाने पर यूहन्ना जीवित न होता, तो यह निश्चित रूप से कुछ मसीहियों को गलतफहमी नहीं होनी थी। यीशु का यह कहने का इरादा नहीं किया कि प्रेरित यूहन्ना दूसरे आगमन तक पृथ्वी पर जीवित रहेगा। तो तब पतरस के लिए यीशु के उत्तर का क्या अर्थ था?

(2) यीशु ने सिखाया कि पतरस को परमेश्वर की छिपी हुई इच्छा के साथ स्वयं को नहीं लगाना चाहिए।

यीशु मसीह ने कहा, "यदि मैं चाहूँ कि वह तब तक जीवित रहे जब तक मैं वापस न आ जाऊं, तो तुम्हें इससे क्या मतलब है?" प्रभु यीशु मसीह की अपने शिष्य यूहन्ना के लिए अपनी एक योजना थी, परन्तु उसे जानना प्रेरित पतरस का काम नहीं था। यूहन्ना को शहीद की मृत्यु की पीड़ा सहनी पड़ सकती है या वह प्रभु के दूसरे आगमन तक जीवित रह सकता है। पतरस को यह जानने की आवश्यकता नहीं है! यीशु मसीह ने अपनी छिपी हुई इच्छा को यूहन्ना पर प्रकट नहीं की और पतरस पर भी नहीं! जो महत्वपूर्ण है वह भविष्य के विषय में जिज्ञासा नहीं, परन्तु वर्तमान में प्रभु की आज्ञा का पालन करना है: "मेरा अनुसरण कर!" मेरे मेमनों को खिला!" मेरी भेड़ों की देखभाल कर (चरवाहा)!" मेरी भेड़ों को खिला!" पतरस को लोगों के भविष्य से सम्बंधित परमेश्वर की छिपी इच्छा के साथ नहीं, बल्कि लोगों के लिए परमेश्वर की वर्तमान इच्छा के साथ स्वयं को लगाना चाहिए! यूहन्ना के लिए यीशु की योजना में हस्तक्षेप करने या मध्यस्थता करने में पतरस का कोई काम नहीं है। उसका यह काम है कि वह प्रभु यीशु मसीह का अनुसरण करे और अपने स्वयं के लिए बुलाहट और नियुक्त कार्य के प्रति विश्वासयोग्य रहे।

मसीहियों को भी उन चीजों के साथ स्वयं को नहीं लगाना चाहिए, जो यीशु मसीह ने उन पर प्रकट नहीं की हैं। इसके बजाय, उन्हें बाइबल में परमेश्वर की प्रकट योजना के साथ स्वयं को लगाना चाहिए। "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएं" (व्यवस्थाविवरण 29:29)! अभी भी बहुत काम होना बाकी है!

- लोगों से भरी एक दुनिया है जिसे सुसमाचार सुनना चाहिए (मत्ती 24:14)!
- दुनिया के सभी देशों के लोगों को यीशु मसीह का चेला बनाया जाना चाहिए (मत्ती 28:19)
- लाखों गरीब और बेसहारा लोगों को खाना खिलाना और देखभाल की जानी चाहिए।

पतरस और सभी मसीहियों को उस कार्य पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए! ऐसे समय होते हैं जब हमारे प्रश्न अवैध और अनुचित होते हैं! परमेश्वर की अनन्त और छिपी हुई इच्छा के प्रति प्रश्न हमेशा अवैध और अनुचित होते हैं!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 21:1-25 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 21:1-25 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

21:3. पतरस अपने पिछले व्यवसाय में लौट गया: वह मछली पकड़ने गया। जब भी आप नहीं जानते कि क्या करना है, जाओ और यीशु मसीह की अंतिम स्पष्ट आज्ञा करो। किसी ने कहा, अंधेरे में कभी उस पर संदेह न करें जो कि परमेश्वर ने आपको प्रकाश में कहा है![ष]

21:4. यह जानिए कि यीशु मसीह कभी-कभी आपसे मिलने आ सकते हैं और हो सकता है कि आप तुरंत उसे न पहचानें।

21:6. यदि आप यीशु मसीह पर भरोसा करते हैं, तो वह करें जो वह कहता है। आप कभी भी निराश नहीं होंगे कि आपने आज्ञा का पालन किया!

21:12. यीशु मसीह से प्रश्न पूछने से कभी न डरें "आप कौन हैं?" यह केवल तभी है जब आप खोजते हैं कि आप पाएंगे, और जब आप माँगोगे कि आपको मिलेगा (मत्ती 7:7-8)।

21:14. बाइबल उन सभी महत्वपूर्ण समयों को दर्ज करती है जब यीशु मसीह मृतकों से पुनरुत्थान के पश्चात लोगों को दिखाई दिए। अपने लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिए कोई अन्य धर्म अगुवा नहीं मरा। किसी अन्य धर्म में कोई भी ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि उनके धार्मिक अगुवे को मृतकों में से पुनर्जीवित किया गया था! और इस बात का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है कि ऐसा धार्मिक अगुवा अपनी मृत्यु के पश्चात लोगों के सामने आया था! मरे हुओं में से जी उठना और उसके पश्चात यीशु का दिखना दुनिया के इतिहास में बिलकुल अनोखा है!

21:15-16. आप यीशु के इस प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे, "क्या तुम मुझ से सच में प्रेम करते हो?"

21:15-17. परमेश्वर के राज्य में सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक भेड़ की चरवाही करना है।

21:18. यहाँ तक कि जब अन्य लोग आपको उस स्थान पर ले जाते हैं जहाँ आप नहीं जाना चाहते, तो यीशु मसीह उपस्थित होंगे (मत्ती 28:20)।

21:19. सभी मसीहियों का काम यीशु मसीह का अनुसरण करना है।

21:22. मसीहियों को स्वयं को परमेश्वर की न प्रकट हुई इच्छा के साथ नहीं लगाना चाहिए, बल्कि परमेश्वर की प्रकट इच्छा के साथ होना चाहिए।

2. यूहन्ना 21:1-25 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं पतरस की पहली सीख से अपने विषय में केवल यथार्थवादी और गंभीर बयान करना सीखता हूँ। एक फुलाया हुआ आत्मसम्मान घमण्ड है और पतन से पहले घमण्ड आता है।

मैं पतरस की दूसरी सीख से परमेश्वर की छिपी इच्छा के साथ स्वयं को न लगाना सीखता हूँ, परन्तु बाइबल में की केवल परमेश्वर की प्रकट इच्छा के साथ! और फिर यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए अपनी सारी ऊर्जा और समय का निवेश करना!

कदम 5. प्रार्थना।	**प्रतिउत्तर**
आइये यूहन्ना 21:1-25 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)	

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें(रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2. यूहन्ना 21 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रकाशिवाक्य 15-18 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(20) यूहन्ना 18:36**। रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है(भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें।** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।